RAJYA SABHA

Wednesday, the 23rd September, 1964/ the 1st Asvina, 1886 (Saka)

The House met at eleven of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

उर्वरकों के मूल्य

*३५३. **श्री भगवत नारायण भार्गव** : क्या योजना मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) नाइट्राजनी तथा फास्फेटी उर्वरकों के मूल्य कम करने के सम्बन्ध में योजना आयोग के विशेषज्ञ दल ने क्या राय दी , और

(ख) इस दल की सिफारिशों के प्रति सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

†[PRICES OF FERTILIZERS

*353. SHRI B. N. BHARGAVA: Will the Minister of PLANNING be pleased to state:

(a) the opinion given by the Panel of Experts of the Planning Commission in regard to reduction in the prices of nitrogenous and phosphatic fertilizers; and

(b) what is Government's reaction to the recommendations of the Panel?]

योजना मंत्री (श्री बी० आर० भगत) : उर्वरकों की वर्तमान कीमतें बहुत ज्यादा है। यद्यपि उर्वरकों की कुछ किस्मों की कीमतें कुछ समय पहले घटाई गई हैं फिर भी, यदि जरूरत पड़े तो सहायता देकर उन्हें घटाने की आवश्यकता है ।

(ख) यह विचाराधीन है ।

†[THE MINISTER OF PLANNING (SHRI B. R. BHAGAT): (a) The existing prices of fertilisers are too high and though some reductions have lately been made in the case of certain types of fertilisers, there is need to reduce them further, if necessary, by subsidising them.

(b) It is under consideration.]

श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि प्लानिंग कमिशन के पैनल आफ एक्सपर्ट्स ने जिस रेट का संकेत दिया था उसमें और आज कल के रेट्स में कितना अन्तर है ?

श्री बी० आर० भगत : प्लानिंग कमिशन ने तो नहीं लेकिन वर्किंग ग्रुप ने जिसने फर्टिलाइजर्स पर और एग्रिकल्चर के सिलसिले में अभी विचार किया है उसने कहा है कि फर्टिलाइजर्स की खपत ज्यादा बढ़े और किसानों को यह स्वीकृत हो इसलिये इसके दाम में जो अभी है उससे कम से कम २० परसेंट कमी होनी चाहिए । तो यह मैंने कहा कि यह विचाराधीन है ।

श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या गवर्नमेंट का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है कि जो छोटे-छोटे किसान हैं वे फर्टिलाइजर्स खरीदने में बिल्कुल असमर्थ हैं तो क्या गवर्नमेंट यह विचार करेगी कि छोटे-छोटे किसानों को बिना मूल्य के फर्टिलाइजर्स दिया जा सके ?

श्री बी० आर० भगत : बिना मूल्य के दिया जाना तो बहुत कठिन है, आखिर उसकी पूरी कीमत सरकार को देनी पड़ेगी और उसमें बहुत रुपया लगेगा मगर यह पूरी कोशिश होगी जैसा कि मैंने कहा कि अगले वर्ष में जहां तक संभव हो इसके दाम घटाये जाने चाहिए और उनको फर्टिलाइजर्स खरीद सकें इसके लिए कर्जे की व्यवस्था सस्ते सूद पर हो कोआपरेटिव या दूसरे जरियों द्वारा—तो यह सब इन्तजाम होगा ।

SHRI JOSEPH MATHEN: Is it a fact that an American expert team visited this country and it suggested ways

† [ ] English translation.

and means to supply cheaper fertilisers to agriculturists in this country?

SHRI B. R. BHAGAT:: Sir, the fertiliser production takes into account all the technological and economic advances that have recently been achieved and if the units are set up on that basis, it is possible to reduce considerably the prices of fertilisers.

SHRI C. D. PANDE: Sir, there is a retention charge of Rs. 50 per ton and also a charge of Rs. 50 as distributors' commission. That makes Rs. 100 a ton which is a very substantial portion of the price charged from the consumers. Will the Government do away at least with this so that there should be no profit and also will the Government see to it that the distribution charge also is reduced to a reasonable limit?

SHRI B. R. BHAGAT: Sir, the charges that go to the intermediaries are not to that extent but efforts are made to reduce them to the extent possible.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान् को ज्ञात है कि शासन द्वारा मूल्यों में कुछ सहायता देने के बावजूद भी कई सहकारी समितियां व्यवस्था के ज्ञान के अभाव में, व्यापारिक ज्ञान के अभाव में, डेमरेज और अन्य मदों पर इतना अधिक खर्चा कर देती हैं कि हमारी दी हुई सुविधाओं के बावजूद भी उनका खर्चा अधिक होने के कारण कीमत अधिक होती है । तो ऐसी दशा में उस खर्चे में कमी लाने के लिए क्या शासन कुछ करेगा?

श्री बी० आर० भगत : इन सब बातों पर विचार हुआ है और गहरी छानबीन भी हुई है । ये सब प्रशासन की गड़बड़ियां हैं जिसकी वजह से देरी हो जाने से या डेमरेज चार्ज लगने से जो कास्ट बढ़ता है तो जहां तक यह कम हो सके इसकी कोशिश की जा रही है और इसके लिये सुझाव भी दिये गये हैं ।

SHRI SANTOKH SINGH: In spite of the fact that cheap labour is available in India and also the raw materials are indigenously available, may I know why the cost of manufacture of these fertilisers, nitrogenous or phosphatic, is high in India? Is it because of the fact that the capital structure goes high because of the costly imported plants?

SHRI B. R. BHAGAT: Well, this is a matter of detail and all these questions will be looked into. When the new fertiliser plants come into existence, efforts will be made to take advantage of the technological and economic advances that have been made.

श्री देवी सिंह : यह सरकार जो इंटरमीडियरीज इसमें रख रही है इसके बजाय सीधे काश्तकार को क्यों नहीं दे जब कि हमारी सरकार के पास पटवारी वगैरह की मशीनरी मौजूद है ? तो इसको प्राइवेट तरीके पर क्यों दिया जाता है, इसको सरकार क्यों नहीं देती ?

श्री बी० आर० भगत : जो बांटने की व्यवस्था है वह ज्यादातर कोआपरेटिव्ज के जरिये है । जहां कोआपरेटिव कमजोर है वहां सीधे देने की बात हो रही है । जहां कोआपरेटिव मजबूत है वहां काम ठीक से चलता है और वहां इसके बांटने की ठीक व्यवस्था चलती है, जहां नहीं है वहां गड़बड़ चलती है । तो यह तो ह्यूमन आर्गेनाइजेशन को कुशल करने की बात है और उसको अच्छा बनाने पर ही यह हो सकता है ।

SHRI N. SRI RAMA REDDY: Sir, I would like to know how the prevailing prices in India compare with the prices obtaining in important countries like Japan, the United States of America and the U.K. If the ruling prices are far below the prices in India, how is it that in India the prices are much higher than the prices that are prevailing in those countries?

SHRI B. R. BHAGAT: Sir, our fertiliser prices—in India—are higher than the prices in every other country except Spain.

श्री देवकीनंदन नारायण : क्या माननीय मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि फर्टिलाइजर्स में काफी एडल्ट्रेशन होता है तो उसे रोकने के लिए सरकार की ग्रोर से क्या कोशिश की जा रही है ?

श्री बी० ग्रार० भगत : उसकी भी रोकथाम करने की कोशिश की जा रही है ।

खाली सरकारी इमारतें

*३५४. श्री विमलकुमार मन्नालालजी चोरड़िया : क्या निर्माण, तथा ग्रावास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) १ ग्रप्रैल, १९६४ को दिल्ली के किस-किस क्षेत्र में कितनी कितनी सरकारी इमारतें खाली पड़ी हुई थीं; ग्रौर

(ख) उपरोक्त भाग (क) में उल्लिखित इमारतें कब से खाली पड़ी हैं ग्रौर इसके क्या क्या कारण हैं ?

†[VACANT GOVERNMENT BUILDINGS

*354. SHRI V. M. CHORDIA: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

(a) the areas in Delhi where Government buildings were lying vacant on 1st April, 1964 and the number of such buildings in each of these areas; and

(b) since when the buildings mentioned in part (a) above are lying vacant and what are the reasons therefor?]

निर्माण तथा ग्रावास मंत्री (श्री मेहर चन्द खन्ना) : (क) पहली ग्रप्रैल, १९६४ को दिल्ली में तकरीबन कुल ३५,६०० सरकारी इमारतों में से नीचे लिखी गयी महज २२३ इमारतें मुख्तलिफ इलाकों में खाली पड़ी थीं ।

(ख) ये क्वार्टर मुख्तलिफ तारीखों से खाली पड़े हैं । इनमें से मिन्टो रोड ग्रौर डी० ग्राई० जैड० एरिया के ज्यादातर क्वार्टर इसलिए खाली पड़े हैं क्योंकि वे खतरनाक करार दिये जा चुके हैं । दूसरे एरिया में क्वार्टर, मरम्मत, एक मंजिल से दो मंजिल में तबदील करने, छतों को बदलने ग्रौर फ़र्शों को बदलने वगैरा की वजह से खाली हैं ।

†[THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING (SHRI MEHR CHAND KHANNA): (a) Out of a total of about 35,600 Government buildings in Delhi, only about 223 buildings were lying vacant in different areas on the 1st April 1964.

(b) These quarters are vacant from different dates. Most of the quarters in the Minto Road and the D.I.Z. areas are vacant as they have been declared dangerous and unfit for occupation. Quarters in other areas have been lying vacant for carrying out repairs, conversion of single storey buildings into double storey, re-roofing and re-flooring etc.]

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चोरड़िया : क्या श्रीमान यह बतलायेंगे कि विभाग ने कोई ऐसी योजना बनाई है ग्रथवा नहीं—नया निर्माण जो चल रहा है सो चल ही रहा है—कि जो पुराने मकान हैं ग्रौर जो दुरुस्ती के काबिल हैं, जैसे कि फर्श वगैरह को ठीक करा कर काम में ग्रा सकते हैं, उनके लिए प्रायरिटी बेसिस पर कुछ तय करके उनको ठीक करायें ताकि लोगों को उनमें बसाने की व्यवस्था की जा सके ? तो क्या इसको ग्राप प्रायरिटी निश्चित करके करायेंगे ?

† [ ] English translation.